करुणाकर माधव

रागम्: बेगड ताळम्: रूपकम्

(श्री स्वाति तिरुनाळ् विरचित)

पल्लवि

करुणाकर माधव मामव भासुर-
कनक सुरुचिर निजवसन

अनुपल्लवि

मुरशासन जगदीश्वर
मुखनिन्दितशीतरुचे हरे सदा जय जय

चरणम्

पापहरण मुनिमानित गुणगणपालित समभुवन
गोप तनुधर कुरु मे कुशलं सततं सुरासुरादिसेवित ॥ १ ॥

पातसुजनगण मामकहृदि वस फाललसिततिलक
वीतमद भवविधिसेवित भव्यरुचे मनोज्ञ तात शाश्वत ॥ २ ॥

पादविनत सुगमाहिवरशयन पङ्कजनाभ विभो
सादितविमत सरसीरुहलोचन वारणाधिपाधि मोचन ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇